

प्रिटी वुमन, फ्रेगा और वॉल स्ट्रीट

वॉल स्ट्रीट सागा

कुछ फ़िल्में क्लासिक बन जाती हैं। कुछ दर्पण बन जाती हैं।

प्रिटी वुमन ने दोनों किया।

लाखों लोगों ने इसे देखा और एक प्रेम-कथा पाई।

मैंने इसे फ़िर देखा और कुछ और पाया।

मैंने धन के भेस में छुपे अकेलेपन की एक फ़िल्म देखी।

सपने देखने वालों के लिए बनी एक फ़िल्म, खासकर उनके लिए जो कभी वहां नहीं पहुंचे जहां जाना चाहते थे, और जिन्हें यथार्थ के बजाय कल्पना में शरण मिली।

वर्षों में मैंने सीखा है कि फ़िल्में अपने रहस्य कथानक में कभी नहीं खोलती। दिलचस्प भाग बारीकियों में छिपे होते हैं।

एडवर्ड लूइस वित्त का एक दिग्गज है।

वह कंपनियां खरीद सकता है।

वह होटल खरीद सकता है।

वह किसी इमारत की पूरी मंज़िल बिना कीमत देखे खरीद सकता है।

फ़िर भी वह कोई स्त्री नहीं पा सकता।

इसीलिए आखिर में वह हॉलीवुड की एक सड़क पर किसी से मिलता है।

इसलिए नहीं कि वह सेक्स ढूंढ रहा है।

इसलिए कि वह जुड़ाव ढूंढ रहा है।

विडंबना लगभग पीड़ादायक है।

वह जितना अमीर होता जाता है, उतना ही उस एक चीज़ से दूर दिखाई देता है जिसे वह खरीद नहीं सकता।

लोग अक्सर कहते हैं कि स्त्रियां अमीर पुरुषों की तलाश में रहती हैं।

यह कभी मेरा अनुभव नहीं रहा।

अधिकांश स्त्रियां धन की तलाश में नहीं रहतीं।

वे स्थिरता की तलाश में रहती हैं।

पैसा खुद अक्सर बस एक साधन होता है।

मेज़ पर भोजन।

बच्चों के लिए सुरक्षा।

अपने प्रियजनों की रक्षा।

एक स्त्री लोगों के संदर्भ में सोचती है।

एक पुरुष अक्सर संपत्तियों के संदर्भ में सोचता है।

यह अंतर मानव इतिहास के बारे में अधिकांश अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तकों से ज़ोयादा बताता है।

फ़िर पेंटहाउस स्वीट आता है।

सबसे अच्छा कमरा।

सबसे उंची मंज़िल।

वह नज़ारा जिसे सफल लोगों को माना जाता है कि वे उसका आनंद लें।

सिवाय एडवर्ड इसका आनंद नहीं ले पाता।

उसे ऊंचाई से डर लगता है।

उसके पास इमारत का सबसे ऊंचा बिंदु है पर वह कभी सच में बाहर नहीं देखता।

मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ।

वे अपनी पूरी जिंदगी चढ़ते हुए बिताते हैं।

फ़िर वे शिखर तक पहुंचते हैं और पाते हैं कि उन्हें नज़ारे से डर लगता है।

बाद में वह स्वीकार करता है कि अपने पिता की कंपनी खरीदने से उसे अच्छा महसूस हुआ।

इस वाक्य के बारे में सोचो।

एक अरबपति भावनात्मक तसल्ली खरीद रहा है।

एक कॉर्पोरेट अधिग्रहण को थेरेपी की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है।

कंपनी कभी लक्ष्य नहीं थी।

एहसास था।

तुलन-पत्र बस डिलीवरी की व्यवस्था था।

फ़िर आता है मेरा पसंदीदा पल।

घास।

वह उसे नंगे पैर चलने को कहती है।

कोई बोर्डरूम नहीं।

कोई वकील नहीं।

कोई बातचीत नहीं।

बस एक आदमी जो अपने पैरों के नीचे धरती को महसूस कर रहा है।

कुछ सेकंड के लिए, वॉल स्ट्रीट का महायाजक पैसे से भी पुरानी किसी चीज़ से फ़िर जुड़ जाता है।

यथार्थ।

प्रकृति कभी बिल नहीं भेजती।

इसीलिए इतने सफल लोग आखिरकार इसे चूक जाते हैं।

अगला विरोधाभास और भी बेहतर है।

वह उस स्त्री की गरिमा की रक्षा करता है जिसे उसने शुरू में नौकरी पर रखा था।

वह अपने ही एक सहयोगी को उसके सम्मान को लेकर चुनौती देता है।

वह व्यावसायी जो इस विश्वास के साथ रिश्ते में आया था कि हर चीज़ की कीमत होती है, अचानक पाता है कि कुछ चीज़ों की नहीं होती।

सम्मान।

गरिमा।

स्नेह।

विश्वास।

बाज़ार चीज़ों की कीमत तय करने में उत्कृष्ट हैं।

वे उनका मूल्य आंकने में बुरी तरह असफल हैं।

फ़िल्म वहीं खत्म हो सकती थी।

सबक पहले ही पूरा हो चुका था।

पर हॉलीवुड अधिकांश दार्शनिकों से बेहतर मानवीय कमज़ोरी समझता है।

यथार्थ शायद ही कभी ब्लॉकबस्टर बनता है।

कल्पना बनती है।

तो, एडवर्ड लाल गुलाबों के साथ लौटता है।

लिमोज़ीन आती है।

संगीत उभरता है।

परी कथा ठीक समय पर पहुंचाई जाती है।

और दर्शक यह मानते हुए विदा होते हैं कि प्रेम ने पैसे को हरा दिया।

मुझे इतना यकीन नहीं।

मुझे लगता है यह फ़िल्म इसलिए बची रहती है क्योंकि यह एक अलग कहानी सुनाती है।

उस स्त्री की कहानी नहीं जिसे एक अमीर आदमी ने बचाया।

उस अमीर आदमी की कहानी जिसे खुद से बचाया गया।

एक वजह है कि महंगे सूट पहनने वाले पुरुष दशकों से इस फ़िल्म से प्रेम करते आए हैं।

इसलिए नहीं कि वे अमीर बनने का सपना देखते हैं।

उनमें से बहुतों के लिए पहले से ही अमीर हैं।

वे इसे इसलिए देखते हैं क्योंकि उन्हें शक है कि अगली डील, अगले अधिग्रहण, अगले बोनस, अगली जीत से परे भी कुछ होना चाहिए।

वे लगातार सबूत ढूंढते रहते हैं।

उनमें बहुतों के लिए, प्रिटी वुमन ही वह सबूत है।

दो घंटे की एक कल्पना जो यह संकेत देती है कि सिले हुए सूट के नीचे अब भी शायद कोई इंसान बचा हो।

तो, क्रेडिट्स खत्म होने के बाद क्या बचता है?

गुलाब नहीं।

पेंटहाउस नहीं।

पैसा नहीं।

प्रेम-कथा भी नहीं।

जो बचता है वह एक सीधा-सा अवलोकन है।

एक आदमी जो कुछ भी बनाता है, वह कहीं पृष्ठभूमि में एक स्त्री से शुरू होता है।

एक मां।

एक बहन।

एक पत्नी।

एक बेटी।

एक अजनबी।

और देर-सवेर जीवन को उसे उस मूल सत्य तक वापस लाने की अजीब आदत होती है।

गलती यह मानने में है कि उसे खरीदा जा सकता है।

नहीं खरीदा जा सकता।

समझदारी भरा कदम है ध्यान देना।

और प्रतीक्षा करना।

क्योंकि स्त्रियों के पास खास मामलों को भांपने का एक राडार होता है।

अधिकतर समय, वे उन्हें पुरुषों से बहुत पहले पहचान लेती हैं।

Ferdinando Frega

Ferdinando Frega — gillettenarrative.com